International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

युद्ध में स्त्री पर बर्बरता (मुद्राराक्षस लिखित युद्ध कहानी से)

Katuva Vinod Malshi

Ph.D. Scholar, KSKY Kachchh University

Abstract (सारांश)

स्त्री पर बर्बरता (मुद्रा राक्षस लिखित युद्ध कहानी के) लेख सुभाष चंद्र आर्य द्वारा स्त्री के प्रति ऐतिहासिक और साहित्यिक दृष्टिकोण का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें मुद्रा राक्षस की युद्धकथाओं में महिलाओं पर होने वाले अत्याचार, उनकी स्थिति और संघर्षों का अध्ययन किया गया है। यह लेख ऐतिहासिक संदर्भों में महिलाओं के प्रति सामाजिक असमानता, शोषण और हिंसा की घटनाओं को उजागर करता है, जो न केवल तत्कालीन समाज का प्रतिबिंब है बल्कि आज के समाज के लिए भी एक सीख है।

आर्य का यह लेख साहित्यिक स्रोतों के माध्यम से स्त्रियों की पीड़ा और साहस का वर्णन करता है, साथ ही यह इस बात पर जोर देता है कि महिलाओं के प्रति हिंसा और असमानता किसी भी युग के समाज के नैतिक मूल्यों पर गहरा प्रभाव डालती है। यह शोध स्त्री विमर्श और साहित्यिक आलोचना के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण योगदान है, जो प्राचीन साहित्य और आधुनिक समाज के बीच सेतु का कार्य करता है।

युद्ध जिसे सुनकर हमारा कलेजा कांप जाता हैं उसी युद्ध और उसके बाद की भयावह स्थिति को लेकर मुद्रा राक्षस ने इस कहानी को गढ़ा है जिसका नाम ही युद्ध है। युद्ध में मनुष्य और मनुष्यता की बात करना शायद बेमानी होगी यह देखा गया है कि हर एक युद्ध के बाद मनुष्यता और मानवीय बातें की तो जाती है लेकिन जल्द ही उसे भूल कर कोई ना कोई फिर किसी न किसी देश से युद्ध करने के लिए तैयार हो जाता है।

अपनी सत्ता कायम करने के लिए अपना आधिपत्य बनाने के लिए आज भी दुनिया में कई देशों में युद्ध चल रहा है। लेकिन सोचने वाली बात यह है इस युद्ध में हानी किसकी होती है कौन है जो सबसे ज्यादा कुर्बानियां देता है। हजारों और लाखों की संख्या में मरने वाले लोगों में सबसे अधिक महिलाएं और बच्चे हैं। सबसे कमजोर और अधिक असहाय युद्ध में इन्हें ही सबसे अधिक सहना पड़ता है रोना पड़ता है मरना पड़ता है।

मुद्राराक्षस ने ऐसी ही स्त्री को केंद्र में रखकर अपनी कहानी की रचना की है जहां एक स्त्री है और एक पुरुष दोनों पति-पत्नी है उनका नाम नहीं लिखा किसी देश का नाम नहीं लिखा किसी भूखंड का नाम नहीं लिखा केवल युद्ध और युद्ध में इंसान से जानवर बनने वाले लोगों की बर्बरता की कहानी लिखी है। जहां युद्ध होता है वहां औरतों के साथ ज्यादती करना मन माने ढंग से हो जाता है। मानो कोई लाइसेंस मिल गया हो औरतों के देह को नोच नोचकर खाने का सभ्यता की बातें धराशाई हो जाती है कोई नहीं होता है सुनने वाला किसी के दुख को समझने वाला सब हैवान बन जाते हैं। स्त्री उन्हें स्त्री के रूप में नहीं दिखाई देती वह केवल एक शरीर के रूप में दिखाई देती हैं। ज्यों _ ज्यों कोई देश दूसरे देश को जीत लेता है सभ्यता के निशानी के रूप में किसी स्त्री के शरीर पर असंख्य घाव देकर चला जाता है। ऐसा घाव और ऐसी पीड़ा जो फिर कभी नहीं भारती जब तक वह जिंदा रहेगी सदैव उसे कुढ़ती रहेगी अंदर से उसे तकलीफ देती रहेगी मन ही मन अंधकार से भर देगी उसे अपने होने पर पछतावा होगा अपने जीने पर पछतावा होगा और लगेगा आखिर यह जीवन ऐसा क्यों है? वह भावसून्य हो जायेगी।उसे लगेगा मानो उसी की गलती है न औरत का शरीर होता न उसके साथ ऐसा होता? हम हर देश की सेना की वीरता की बातें तो करते हैं उसकी देशभक्ति की बातें तो करते हैं लेकिन यह भूल जाते हैं कि इतिहास गवाह है जब-जब भी युद्ध हुआ या दंगा फसाद हुआ तो औरतों को उसकी कीमत चुकानी पड़ी अपने शरीर पर सभ्यता के असंख्य निशानियां लिए वह खामोश है अपना मुंह भी नहीं खोल सकती वह खुलकर बोल भी नहीं सकती नहीं तो जिस देश ने आक्रमण किया कब्जा किया उसे देश के सभ्यता की निंदा हो जाएगी। और जिस देश में वह रहती है अगर उसकी निंदा की तो अपने ही देश के सभ्यता के निंदा हो जाएगी हमारा महान राष्ट्र बदनाम हो जाएगा। वह खामोशी से अपने जिस्म पर जिसे न जाने कितने ही देशभक्तों ने नोच नोच कर खाया है उनके नाखूनों के घाव लिए खामोश बैठी हुई है।

मुद्राराक्षस द्वारा रचित कहानी में भी स्त्री जो भय में है न जाने कब कोई सेना उसके दरवाजे पर दस्तक दे और तार तार कर जाए उसका जिस्म वह हर एक आहट पर डर जाती है। उसे पता है की युद्ध हो रहा है और अब उसे युद्ध की कीमत उसे चुकानी पड़ेगी उसके जैसे न जाने कितनी ही बेसहाय औरतों ने अनादि काल से इसे चुकाया है। पुरुष अपनी मर्दंगिनी का सबसे बड़ा सबूत यही देना चाहता है। या फिर अपने जानवरपन का सबसे बड़ा सबूत दे रहा है। ऐसे समय में सभ्यता संस्कृति की बातें करना बस कोरी बातें ही होगी उसे आवेश में आए हुए सैनिक इन सभी बातों को न जानना चाहते हैं ना तो सुनना चाहते हैं उन्हें बस अपना शिकार करना है और शिकार करके निकल जाना है।

स्त्री के साथ भी ऐसा ही हुआ सैनिकों का एक टोला आया और साथ में आया था उनका अफ़सर स्त्री को देखते ही वह सभी उसे पर टूट पादना चाहते हैं जैसे कोई कसाई टूट पड़ता है अपने शिकार पर पहली बारी होती है बड़े अफसर की जॉन के साथ आया था वह स्त्री से जोर जबरदस्ती करने लगता है। स्त्री

पहले तो उसका मुकाबला करती है कमजोर पड़ने पर वह उसके मुंह पर थूक देती है। यह थूक उन सभी के मुंह पर है उन सभी सभ्य देशों के मुंह पर है जो रात दिन अपनी सभ्यता की दुहाई दिया करते हैं अपने आप को सबसे सर्वश्रेष्ठ बताने में गर्व महसूस करते हैं लेकिन एक स्त्री की अनीक्षा होने पर भी उसे जबरदस्ती अपना शिकार बनना चाहते हैं। अफसर ने भी सारी मर्यादा को भूलकर वह कार्य किया जिसे बयान भी नहीं किया जा सकता। अफसर के साथ आए हुए सैनिकों ने भी एक_ एक करके उसकी लज्जा का दमन किया।

पास में ही खड़ा उसे स्त्री का पति मानो बुत बनकर सब कुछ सुन रहा था पर वह कुछ कर नहीं सकता था असहाय था लेकिन इज्जत के साथ अंत तक लड़ तो सकता था लड़कर मर तो सकता था जब तक वह जिंदा रहता अपनी आंखों के आगे अपनी पत्नी के साथ कुछ भी ऐसा दुर्भाव नहीं होने देता सच्चे वीर और सच्चे पति की यही तो निशानी है लेकिन वह था एक कायर और डरपोक तरह का आदमी जो सब कुछ देखते हुए भी चुपचाप एक कोने में खड़ा था किसका इंतजार कर रहा था कि अभी यह सैनिक और इनका यह अफ़सर चले जाएंगे और मैं दिलासा दूंगा अपनी पत्नी को मात्र दिलासा और कुछ तो वह करने से रहा। चाहता तो इज्जत के साथ मार सकता था पर मरने के लिए भी तो बड़ी हिम्मत और बड़ी ताकत और बड़ी वीरता चाहिए जो लड़ नहीं सकता अपने पत्नी की रक्षा नहीं कर सकता उसे एक सैनिक के सामने किसी बोटी की तरह फेंक सकता है वह भला उसकी रक्षा के लिए क्या लड़ेगा और क्या मारेगा। वहां आए हुऐ अफ़सर टेप रिकॉर्डर के माध्यम से उसे स्त्री का बयान दर्ज कराया की यहां पर आई हुई सेना ने उसके साथ कोई दूर व्यवहार नहीं किया बल्कि उन्होंने उनकी हर तरह से सहायता की है।

उन सैनिकों के चले जाने के बाद पुरुष और स्त्री में कुछ बातें हुई और वह फिर से शांत हो गए इस समय उनके घर में पुनः धमाकों की आवाज सुनाई देती है।

इस बार कोई और नहीं बल्कि उनके अपने देश के ही सैनिक आए थे पर उन्होंने भी वही रूप दिखलाया जो उनसे पहले आने वाले सैनिकों ने दिखलाया था। उन्होंने भी टेप रिकॉर्डर द्वारा उसका बयान दर्ज करवाया कि इससे पहले जो सैनिक यहां आए थे उन्होंने ही उसके साथ यह हैवानियत की है उसके देश के सैनिकों ने तो यहां आने के बाद उसकी मदद की और अपने देश के नारी की सुरक्षा की है।

वह स्त्री जिसके साथ यह सब कुछ हुआ वह कुछ भी बोल सकने मे अक्षम थी। पति पास आया और एक चादर उसने उसके ऊपर डाल दी। फिर वह उसके पास जाकर के कुछ पूछने लगा पत्नी ने एक पल के लिए आंख खोला उसकी ओर देखा और उसके मुंह पर थूक दिया।

एक बार को हमारे मन में यह प्रश्न जरूर कौधता होगा की स्त्री ने आखिरकार ऐसा क्यों किया होगा ? तो उसने ऐसा इसलिए किया होगा क्योंकि हर एक औरत यह चाहती है कि जब उसके संकट की घड़ी हो तब उसका पति ढाल बनाकर उसकी रक्षा करें उसे हर एक मुसीबत से बचाए।

यह पति कैसा था जिसके सामने उसके पत्नी की इज्जत का तार तार हो रहा था पर वह किसी गड़े मुर्दे की तरह सब कुछ सहन कर गया वह एक बार के लिए अपने मर्दानगी दिखाते हुए उन सैनिकों से लड़ तो सकता था। भले ही मर जाता इंसान को एक न एक दिन तो मरना ही है तो क्या हम किसी भी डर की तरह मारेंगे या फिर इंसानियत को जिंदा रखते हुए इज्जत के साथ मरना पसंद करेंगे उसे अपनी पत्नी की रक्षा करते हुए मारना था लेकिन उससे ऐसा हो ना सका यही कारण था उसकी पत्नी ने उसके मुंह पर थूक दिया था। कोई भी पत्नी ऐसा ही करती जैसा उसके साथ हुआ था।

युद्ध की बात और युद्ध की प्रशंसा करने वाले लोगों को यह समझना चाहिए की कोई भी युद्ध इंसानियत के लिए सबसे बड़ा खतरा है वह किसी भी मसले का समाधान नहीं कर सकता क्योंकि वह खुद सबसे बड़ा मसला है साहिर ने भी यही बात कही थी की युद्ध किसी मसले का समाधान नहीं हो सकता। जो है वह नियत हम अपने आम दिनों में कभी नहीं देखते वह सब कुछ हमें युद्ध के समय देखना पड़ता है। युद्ध एक भयावह स्थित है इसे जितना हो सके टालने की कोशिश करनी चाहिए। आज तक युद्ध ने किसी का भी कल्याण नहीं किया बस सर्वनाश किया है सभ्यता को संकट में डाला है औरतों को विधवा बनाया है बच्चों को यतीम बनाया है। इससे किसी का भी भला नहीं हुआ।

अगर हमें इस दुनिया को और भी सुंदर बनाना है तो युद्ध से बहुत ही दूर रहना पड़ेगा और अगर बहुत जरूरी होने पर युद्ध करना भी पड़े तो हमें मानवता को सबसे ऊपर रखना पड़ेगा किसी भी देश की औरतें अपनी माता और बहनों की तरह है हमें इसका ख्याल रखना पड़ेगा तभी जाकर युद्ध की स्थिति में भी हम इनकी रक्षा कर पाएंगे नहीं तो ऐसा न होने पर हर एक जगह ऐसी ही दारुण कहानियां सुनने को मिलेंगे। इन सब को सुनकर हमारी गर्दन शर्म से नीचे झुक जाएगी

हम चाह कर भी अपने आप से अपने लोगों से अपने देश से नजरे नहीं मिल पाएंगे। मुद्राराक्षस अपनी कहानी में यही संदेश देना चाहते हैं हम सभी को यही समझना चाहते हैं कि युद्ध किसी बच्चों का खेल नहीं है यह सब कुछ तहस-नहस कर देता इसका दर्द नासूर बन जाता है आने वाली न जाने कितने ही नस्लों तक यह जख्म बनकर कुरेधता रहता है।

संदर्भ

मुद्राराक्षस :युद्ध

1. मृदुला गर्गः
2. तितलीः यह कहानी युद्ध के दौरान एक लड़की के जीवन पर केंद्रित है।
3. आग: इस कहानी में एक महिला को युद्ध के दौरान हुए अत्याचारों का सामना करना पड़ता है।
4. मनीषा कुलश्रेष्ठः

5. अंधेरे में तारेः इस कहानी में एक महिला को युद्ध के बाद के जीवन में अपने परिवार को बचाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।
6. अमृता प्रीतमः उन्होंने विभाजन के समय महिलाओं के संघर्ष को अपनी कहानियों में चित्रित किया है।